मुनियों में उत्तम ब्रह्मर्षि पराशर
@मेरुश्रृंग
प्रतिष्ठाप्य महालिङ्गं विधिवन्मुनिसतमः।
पुष्पैर्धूपैः सनैवेद्यैरर्चयामासयत्नतः ॥१८॥
अर्थात - श्रेष्ठ मुनि पराशर ने एक बड़े शिवलिङ्ग की शास्त्रोक्त
प्रतिष्ठा की तथा पुष्प, धूप, दीप, नेवैद्य से उसका पूजन करने लगे।

तपस्वियों में श्रेष्ठ महातपस्वी पराशर
@मेरुश्रृंग
त्रिराप्लुत्य शुचिर्धीमान् नाशाग्र प्रहितेक्षणः।
संनिरुध्येन्द्रिय ग्रामादेध्यौ देवंमहेश्वरम् ॥१९॥
शीर्णपर्णाशनोदान्तः काष्ठीभूतः पराशरः।
जुव्हद्धविः परंवन्हौतस्थौ वर्षाणिपञ्चह ॥२०॥
अर्थात - बुद्धिमान एवं पवित्र चरित्र वाले पराशर, नासाग्र पर ध्यान केन्द्रित करते हुये, तीन समय स्नान करते हुये दसों इन्द्रियों पर नियन्त्रण करते हुये, वृक्ष से गिरे हुये जीर्ण पत्तों का भोजन करते हुये, शिवजी का ध्यान करते-करते, तपस्या से लकड़ी के समान कृशकाय हो गये।
- स्कन्द पुराण, श्रीमाल महात्मये, पराशरेश माहात्म्य, अध्याय-६१

दृढ़व्रती तथा महातपस्वी पराशर
@मेरुश्रृंग
मातृणां संनिधौ कुण्डं ततः कृत्वा बहूदकम्।
ईशमाराधयामाससंदिद्यक्षुः पराशरः ॥१७॥
अर्थात - तत्पश्चात् उन देवियों के लिये, एक सुन्दर जल कुण्ड
के निर्माण की इच्छा से पराशर शंकर भगवान की आरधना करने लगे।
- स्कन्द पुराण, श्रीमाल माहात्म्य, अध्याय-६१

buland

■ स्कन्द पुराण के 'श्रीमाल माहात्म्य' (श्रीमाल पुराण) के अनुसार भगवान श्री 'पराशर" जी के द्वारा महादेव की घोर तपस्या, जिसके कारण उनका शरीर लड़की के समान कृशकाय हो गया था, का शास्त्रोक्त विस्तृत वर्णन -

◆ कथा का मूल श्लोकों सहित विस्तृत विवरण...✍️

पराशरेश्वरं गच्छेतत्र तीर्थमनुत्तमम्।

तेषे पराशरः पूर्व तपोयत्र महातपाः ॥१॥

राक्षसात्पितृवैरेण जुव्हन्तमनलेपुरा।

राजन्नहमवोचन्तंतप्तारमिदमादरात् ॥२॥

हन्ता त्राता न कस्यापि कश्चिदस्तीहनिश्चितम् ।

यतः स्वकृतभुग्लोके नरोनित्यं न संशयः ॥३॥

तपोनाशयतिक्रोधः तमोनाशयति प्रज्ञां तपोनाशयतिबलम् ।

तस्मात्तम्परिवर्जयेत् ॥४ ॥

यस्मादुत्पद्यते क्रोधस्तापकारी शरीरिणाम्।

दहेत्ताततमेवाशु धुमकेतुर्यथावनम् ॥५॥

क्रोधः शस्त्रमलोहं च क्रोधः शत्रुरमूर्तिमान्।

क्रोधश्चानिधनोवन्हि तस्मात्तं परिवर्जयेत् ॥६॥

इत्येवमादिभिर्वाक्यैः सान्तिवतः सतदामुनिः।

प्रसन्नहृदयो धीमान्मामुवाच पराशरः ॥ ७॥

॥ पराशर उवाच ॥

विरतोस्मितवादेशात्तातरक्षः कुलक्षये।

किन्त्वेताशक्तयः सप्तमयारक्षोवधायवै ॥८॥

आराध्य विविधैस्तोत्रै समाहूताः सुवर्चसः।

रक्षः कुलं प्रधक्ष्यन्तिता निवारयमाचिरम् ॥९॥

॥ वसिष्ठ उवाच ॥

इत्युक्तोऽहंतदातेन शक्तिपुत्रेण भूमिप।

ताः प्रणम्य पराःशक्तिरवोचमिदमानतः ॥१०॥

मातरोनः प्रसीदन्तु यासांकर्मातिदुष्करम्।

उवाचक्रोष्टुनापृष्टोमृकण्डतनयोमुनिः ॥११॥

मरुतोयाः समाश्रित्य देत्यान्निघनन्तिकोटिशः।

त्रैलोक्यस्वा पत्यंचभुञ्जन्तेविगतज्वराः ॥१२॥

॥ देव्यउचुः॥

विरताः स्मोधुनाविप्ररक्षसांसंक्ष्यादिह।

स्थास्यामश्चात्रचेच्छम्भोः सामीप्यं नो भविष्यति ॥१३॥

॥वसिष्ठ उवाच॥

इत्थंनिशम्य मातृणांमुनिः प्राह पराशरः। ॥१४॥

॥पराशर उवाच॥

तपसाराधयिष्यामि युष्माकं प्रीतये शिवम्।

युष्माभिः स्थितिरत्रैवदेव्यः कार्याममाश्रमे ॥१५॥

॥ वसिष्ठ उवाच ॥

तथास्त्विवितिप्रति श्रुत्यमातरश्चक्रिरेस्थितिम्।

गतोऽहंचयथास्थानं सान्त्वयित्वा पराशरम् ॥१६॥

मातृणां संनिधौ कुण्डं ततः कृत्वा बहूदकम्।

ईशमाराधयामाससंदिद्यक्षुः पराशरः ॥१७॥

प्रतिष्ठाप्य महालिङ्गं विधिवन्मुनिसतमः।

पुष्पैर्धूपैः सनैवेद्यैरर्चयामासयत्नतः ॥१८॥

त्रिराप्लुत्य शुचिर्धीमान् नाशाग्र प्रहितेक्षणः।

संनिरुध्येन्द्रिय ग्रामादेध्यौ देवंमहेश्वरम् ॥१९॥

शीर्णपर्णाशनोदान्तः काष्ठीभूतः पराशरः। 👈

जुव्हद्धविः परंवन्हौतस्थौ वर्षाणिपञ्चह ॥२०॥

प्रत्यक्षोऽभूत्ततोदेवः सर्वव्यापी महेश्वरः।

भासयन्नाश्रम भुवंतेजोभिरिदमब्रवीत् ॥२१॥

॥ देवदेव उवाच ॥

वरंवरवदे वर्षेयस्त्वयाचिन्तितोहृदि।

तंते दास्याम्यहं तुष्टो यद्यपि स्यात्सुदुर्लभः ॥२२॥

॥ पराशर उवाच ॥

राक्षसेन महादेवपुरामेभक्षितः पिता।

तेनाहं क्रुद्धहृदयः कृतवान्कर्मगर्हितम् ॥२३॥

कर्मणा तेन चित्तंमेन शुद्धति कदाचन।

शीलंचिन्तयतो देववशिष्ठस्य महात्मनः ॥२४॥

॥देवदेव उवाच॥

नचतेयंमुनेदोषः क्रुद्धस्य पितृनाशतः।

पुरा राक्षस सत्रं हि दृष्टामे तत्पुरातने ॥२५॥

प्रत्यक्षस्तवजातोहं दुष्करं सर्वतस्तपः।

तद्ब्रूहियदि हा प्राप्यं देवैरपि पराशरः ॥२६॥

॥ पराशर उवाच ॥

यदितुष्टोसि देवेश सर्वाभिः सहमातृभिः।

तदिह स्थियतां नित्यमाश्रमे ममशंकर ॥२७॥

॥ शंकर उवाच ॥

भक्त्या तव मयानूनंस्थितिः कार्यातपोधन।

अवश्यमाश्रमेह्यस्मिन्मातृभिः सह सर्वदा ॥२८॥

एकाग्रमनसोभूत्वा ये नमिष्यन्ति मामिह।

नतेषां भयकारिण्यः कदाचिदद्यमयातनाः ॥२९॥

येऽत्र कुर्वन्ति वै मर्त्या कुण्डे स्नानं समाहिताः।

नमिष्यन्ति च मातृभ्यः स्वर्गिणस्ते न संशयः ॥३०॥

॥मातरउचुः॥

पूजयिष्यति यो ह्यस्माभिह नित्यं पराशर।

प्रसन्नास्तस्य दास्यामः श्रियंकीर्तिं च दुर्लभाम् ॥३१॥

अस्मिन्कुण्डे नरः स्नात्वा दृष्टादेवं महेश्वरम्।

अस्मान्द्रक्ष्यति यत्नेन न तस्यास्ति रिपोर्भयम् ॥३२॥

वैशाखस्य चतुर्दश्यां यः पराशर शंकरम्।

द्रक्ष्यति श्रद्धयायुक्तः सभूयस्यान्नदेहवान् ॥३३॥

॥ वसिष्ठ उवाच ॥

इत्युक्त्वांन्तर्दधुर्देव्यो देवश्च परमः शिवः।

वासिष्ठमुनेर्दत्वा तीव्रस्य तपसः फलम् ॥३४॥

असितायां चतुर्दश्यामद्यापि मनुजेश्वर।

रमन्ते मातरो नित्यं प्रत्यक्षाः सह संम्भुना ॥३५॥

एतत्पराशरेशस्य माहात्म्यं कथितं मया।

यस्य दर्शन मात्रेण नरः पापात्प्रमुच्यते ॥३६॥

अर्थात - वसिष्ठ बोले - हे राजन ! जिस जगह 'पराशरेश्वर' नामक अतिउत्तम तीर्थ है, वहां जाओ। वहां पर प्राचीन काल में महान् 'पराशर' नामक ऋषि राक्षसों के नाश हेतु अग्नि में लगातार आहुति दे रहे थे। उनको अभिचार-मारण युक्त यह काम करते देखकर मैं आदरपूर्वक 'पराशर' से इस प्रकार बोला - ॥१-२॥ 👈

हे मुनि ! इस जगत में कोई किसी को मारने में समर्थ नहीं है तथा न ही कोई किसी की रक्षा करने में समर्थ है। किये गये कर्मों का फल मनुष्य को भोगना ही पड़ता है, इसमें कोई संशय नहीं। ॥३॥

क्रोध तप का नाश करता हैं तथा तम बल का नाश करता है, तपस्या का अहंकार बुद्धि को नष्ट कर देता है। अतः क्रोध का हर परिस्थिति में त्याग ही करना चाहिए। ॥४॥

जिन मनुष्यों को तपस्या करने से क्रोध उत्पन्न होता है उनको क्रोध सशरीर ठीक उसी प्रकार से जला डालता है जिस प्रकार से धूमकेतु वृक्षयुक्त जंगल को जला डालता है। ॥५॥

क्रोध तो इस संसार में बिना लोहे का शस्त्र है, क्रोध मनुष्यों का न दिखलाई देने वाला देहरहित शत्रु है। क्रोध बिना ईंधन की अग्नि है, इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति को क्रोध का हर परिस्थिति में त्याग ही कर देना चाहिए। ॥६॥

इस प्रकार अनेक सान्त्वना युक्त नीति वचनों को सुनकर पराशर ऋषि प्रसन्न होकर, इस प्रकार से बोले। ॥७॥

पराशर बोले - हे तात ! आपके आदेश से मैं राक्षसों का कुल नाश करने के कर्म से विरक्त हो गया हूँ परन्तु मैंने विविध स्तोत्रों द्वारा आराधना करके राक्षसों के कुल को जलाकर भस्म कर देने वाली सात तेजस्वी शक्तियों का यहां आह्वान कर दिया हैं। अतः अब आप उसका निवारण कैसे करे ? यह बतावे। ॥८-९॥

वसिष्ठ बोले - हे राजन् ! पराशर के इस प्रकार कहने पर मैंने नम्रतापूर्वक उन तेजस्वी शक्तियों को प्रणाम करके इस प्रकार कहा - हे मातृ शक्तियों ! आप प्रसन्न होकर ऐसा कार्य करें जिसका आश्रय करके करोड़ों दैत्य चिन्ता रुपी ज्वर से मुक्त हो जाये। ॥१०-१२॥

देवियां बोलीं - हे ऋषि ! आपके वचन से हम राक्षस कुल के नाश करने के कर्म से विरक्त हुए पर अब से हम यहीं इस स्थान पर निवास करेंगी जिससे हमको शंकर का सान्निध्य प्राप्त होगा। ॥१३॥

वसिष्ठ बोले - इस प्रकार से दिव्य शक्तियों के वचन सुनकर पराशर बोले। ॥१४॥

पराशर बोले - हे देवियों ! आपके स्नेह युक्त वचनों को सुनकर मैं संतुष्ट हूं और अब यहां पर भगवान शंकर की उपासना करूंगा। आप सभी दिव्य शक्तियों मेरे आश्रम में ही निवास करे। ॥१५॥

वसिष्ठ बोले - 'तथावस्तु' कहकर दिव्य शक्तियों ने वहीं स्थिति कर ली तथा पराशर जिस स्थान से आया था वहीं वापस चला गया। 👉 तत्पश्चात् उन देवियों के लिये, एक सुन्दर जल कुण्ड के निर्माण की इच्छा से पराशर शंकर भगवान की आरधना करने लगे। श्रेष्ठ मुनि पराशर ने एक बड़े शिवलिङ्ग की शास्त्रोक्त प्रतिष्ठा की तथा पुष्प, धूप, दीप, नेवैद्य से उसका पूजन करने लगे। 👉 बुद्धिमान एवं पवित्र चरित्र वाले पराशर, नासाग्र पर ध्यान केन्द्रित करते हुये, तीन समय स्नान करते हुये दसों इन्द्रियों पर नियन्त्रण करते हुये, वृक्ष से गिरे हुये जीर्ण पत्तों का भोजन करते हुये, शिवजी का ध्यान करते-करते, तपस्या से लकड़ी के समान कृशकाय हो गये। 👈 फिर श्रेष्ठ द्रव्यों का अग्नि में हवन किया। पांच वर्ष पश्चात् सर्वव्यापी भगवान शंकर अपने तेज से आश्रम भूमि को प्रकाशित करते हुये दिव्य स्वरुप में प्रकट हुये। ॥१६-२१॥

हे देवर्षि ! जो कुछ तेरे मन में हो वह वर मांगों, मैं तुम पर प्रसन्न हूँ अतः अत्यन्त दुर्लभ वर भी दूंगा। ॥२२॥

पराशर बोले - हे शंकर ! मेरे (माता-) पिता का राक्षसों ने भक्षण किया। जिससे क्रोध युक्त होकर मैं निन्दित कर्म को करने लगा परन्तु महात्मा वसिष्ठ के शील युक्त वचन से मैंने यह विचार त्याग दिया। मेरे इन् दूषित विचारों से मेरा अंतःकरण शुद्ध नहीं हुआ। उसकी शुद्धता का उपाय करें। ॥ २३-२४॥

महादेव बोले - हे ऋषि ! पिता की मृत्यु से प्राप्त हुये क्रोध व शोक के कारण तुम्हें कोई दोष नहीं, तुम्हारे यज्ञ से मैं प्रसन्न हुआ। प्रत्येक स्थल पर यज्ञ करने से सिद्धि नहीं मिलती। अतः जो देवताओं को भी दुर्लभ हो ऐसा वर मांग। ॥२५-२६॥

पराशर बोले - हे देवेश ! जो आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो सभी दिव्य मातृ शक्तियों के साथ यहीं निवास करें। ॥२७॥

महादेव बोले - हे तपोधन ! तेरी भक्ति के कारण यह स्थान निश्चय ही सभी मातृ शक्तियों के साथ मेरे रहने योग्य है। ॥ २८॥

जो मनुष्य इस स्थान पर एकाग्रचित से मुझे नमस्कार करेगा उसको किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा। जो मनुष्य इस कुण्ड में सावधान होकर स्नान करेगा और माताओं को नमस्कार करेगा, वह सीधा स्वर्गलोक को प्राप्त करेगा, इसमें कोई संशय नहीं। ॥२९-३०॥

देवियाँ बोली - हे पराशर ! जो मनुष्य इस स्थान पर आकर हमारी नित्य पूजा करेगा उनको प्रसन्न होकर हम खूब धन एवं दुर्लभ कीर्ति प्रदान करेंगी। ॥३१॥

जो मनुष्य इस कुण्ड में स्नान करके भगवान शंकर के दर्शन करेगा और यत्नपूर्वक हमारे दर्शन भी करेगा, उसको किसी भी प्रकार के शत्रु का भय नहीं रहेगा। वैशाख मास की चतुर्दशी को पराशर ऋषि के इस आश्रम में शंकर का जो श्रद्धा पूर्वक दर्शन करेगा, वह पुनर्जन्म के बन्धन से मुक्त हो जाएगा। ॥३२-३३॥

वसिष्ठ बोले - हे नृप ! इस प्रकार कहकर दिव्य शक्तियां और देवों के देव शंकर पराशर ऋषि को उग्र तपस्या का फल देकर अंतर्ध्यान हो गए। ॥३४॥

हे मनुजेश्वर (राजन् मान्धाता) ! यहाँ (महर्षि पराशर के इस आश्रम में) माता (पार्वती) आज भी कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को सदा भगवान शम्भु के सहित प्रत्यक्ष रूप में निवास करती हैं। ॥३५॥

यह पराशर शंकर का महात्म्य मैंने तुम्हें कहा है जिसके दर्शन करने से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है । ॥३६॥

-स्कन्द पुराण, ब्राह्मविभागे, श्रीमाल माहात्म्य, 'पराशर महात्म्य', अध्याय-६१